विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2562, ज्येष्ठ पूर्णिमा 28 जून, 2018, वर्ष 47, अंक 13

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

उत्तिट्ठे नप्पमज्जेय्य, धम्मं सुचरितं चरे।
धम्मचारी सुखं सेति, अस्मिं लोके परम्हि च।।

धम्मपद लोकवग्गो, 168

उठे (उत्साही बने), प्रमाद न करे, सुचरित धर्म का आचरण करे। धर्मचारी इस लोक और परलोक (दोनों जगह) सुखपूर्वक विहार करता है।

क्या है बुद्ध-शिक्षा

तीसरा व्याख्यान, भाग-2.... (ता.14 अक्टूबर, 1951) क्रमशः

— थ्रे सिदु सयाजी ऊ बा खिन

(रंगून के पगोडा रोड स्थित मेथोडिस्ट गिरजाघर में धर्म जिज्ञासुओं की एक सभा में बर्मा सरकार के महालेखापाल (अकाउंटेंट जनरल) रहते हुए कम्मट्ठानाचार्य थ्रे सिदु ऊ बा खिन ने तीन व्याख्यान दिये थे, जिनके अनुवाद का यह अंतिम भाग है।)

— (अनु.: स. ना. गोयन्का)

लोकधातु और धर्मधातु

बुद्ध-शिक्षा में हम लोकधातु और धर्मधातु में प्रभेद मानते हैं। धातु का अर्थ है स्वभाव तत्व अथवा स्वभाव शक्तियां। अत: लोकधातु का अर्थ हुआ भौतिक जगत में व्याप्त प्राकृतिक तत्व या प्राकृतिक शक्तियां। और धर्मधातु का अर्थ हुआ चित्त, चित्तवृत्तियां और प्रकृति के वे सूक्ष्म मौलिक तत्व जो कि भौतिक जगत के बजाय मानसिक जगत से संबंधित हैं। आधुनिक विज्ञान लोकधातु तक ही सीमित है। और लोकधातु मनोजगत के धर्मधातु का आधार स्तंभ है। बस लोकधातु से एक कदम ऊपर चढ़े कि मनोजगत में पहुँच गये। परंतु आधुनिक विज्ञान की जानकारी से नहीं, बल्कि धर्म के व्यावहारिक ज्ञान द्वारा ही ऐसा हो सकता है।

''परिपक्व चित्त'' नामक पुस्तक के लेखक श्री एच. ए. ओवरस्ट्रीट (प्रकाशक डब्लू. डब्लू. नोर्टन एंड कं. इंक., न्यूयार्क) तो परिपक्व चित्त वाले मानव के उज्जवल भविष्य के प्रति बहुत ही आस्थावान दिखते हैं। उन्होंने कहा है:--

''हमारी शताब्दी का विशिष्ट ज्ञान मनोवैज्ञानिक है। भौतिक और रसायन शास्त्र में हमने जो भी प्रगति की है वह तो मुख्यत: अनुसंधान के जाने-माने तरीकों के प्रयोग द्वारा ही की है। परंतु हमारे इस युग में मानवी स्वभाव और अनुभूतियों के प्रति जो (आध्यात्मिक) दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ है वह सर्वथा नवीन है।

''लेकिन यह दृष्टिकोण इससे पूर्व उत्पन्न हो भी नहीं सकता था। इसके उत्पन्न होने के पूर्व बहुत लंबे अरसे की तैयारियां आवश्यक थीं। पहले शरीर विज्ञान उन्नत होना आवश्यक था क्योंकि मनोवैज्ञानिक मनुष्य शरीर-वैज्ञानिक भी तो है। उसका चित्त अन्यान्य चीजों के साथ-साथ एक ऐसा भौतिक पदार्थ भी तो है जिसमें कि ज्ञान तंतु, स्नायु-नाड़ियां, ग्रंथियां तथा स्पर्श, गंध और दृष्टि संबंधी ज्ञानेंद्रियां सम्मिलित हैं। सत्तर वर्ष पूर्व प्रसिद्ध शरीर शास्त्री विलियम बुंड्ट ने अपनी प्रयोगशाला में मनोवैज्ञानिक शरीर शास्त्र का अनुसंधान आरंभ किया था। इससे पूर्व यह संभव भी नहीं था क्योंकि तब तो शरीर-विज्ञान ही पर्याप्त मात्रा में उन्नत नहीं हो पाया था। और शरीर विज्ञान के पूर्व जीव-विज्ञान समुन्नत होना आवश्यक था। चूंकि दिमाग, नाड़ियां, स्नायु-ग्रंथियां और बाकी सभी कुछ जीवकोषों के विकास पर निर्भर करते हैं, इसलिए एक समर्थ शरीर विज्ञान के प्रकट होने के पूर्व जीव-कोष विज्ञान का परिपक्व होना आवश्यक था।

''परंतु जीव-विज्ञान के पूर्व चाहिए था रसायन शास्त्र और रसायन शास्त्र के पूर्व भौतिक शास्त्र और भौतिक शास्त्र के पूर्व गणित शास्त्र। इस प्रकार तैयारियों का यह लंबा तारतम्य विगत कई शताब्दियों से चला आ रहा है।

''संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विज्ञान का भी अपना काल नियमन है। प्रत्येक विज्ञान को तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है जब तक कि उसका समय न आ जाय। आज मानो मनोविज्ञान का समय आ गया है। इस दिशा में एक नया बोध आरंभ हो रहा है।

''वास्तव में इस नये विज्ञान के प्रति लोगों की दिलचस्पी बहुत पुरानी है। परंतु इस क्षेत्र में अनुसंधान की सूक्ष्म यथार्थता नवीन ही है। न्याय-तर्क का एक कठोर नियम इसका नियंत्रण करता है। अपनी विशिष्ट यथार्थता के लिए प्रत्येक विज्ञान को तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है जब तक कि उसका पूर्वगामी उसे वे सारे तथ्य और उपकरण नहीं दे देता जिनसे कि यह यथार्थता बनती है। आज विज्ञान की घड़ी ने मानो एक नया घंटा बजाया है। एक नई अंतर्दृष्टि हमारी सेवा के लिए उपस्थित हो गयी है।''

मैं यह कहना चाहता हूं कि मानवी स्वभाव की सच्चाई के अनुसंधान के लिए जो नयी अंतर्दृष्टि चाहिए उसे प्राप्त करने के लिए हम सभी को बुद्ध-शिक्षा का अध्ययन करना होगा। जितने मानसिक विकार मानव को प्रभावित करते हैं उन सबके उपशमन का उपाय बुद्ध-शिक्षा में विद्यमान है। विश्व की वर्तमान स्थिति का उत्तरदायित्त्व अतीत और वर्तमान की अकुशल मनोवृत्तियों पर ही तो है। लगभग दो वर्ष पूर्व बर्मा पर जब महान संकट आया था तब लोगों में बुद्ध-शिक्षा के प्रति दृढ़ आस्था पैदा करके ही हम उस संकटापन्न स्थिति को पार कर पाये थे।

आजकल तो जहां देखो वहीं असंतोष फैला हुआ नजर आता है। असंतोष से दुर्भावना उत्पन्न होती है। दुर्भावना से घृणा उत्पन्न होती है। घृणा से शत्रुता उत्पन्न होती है। शत्रुता से युद्ध उत्पन्न होता है। युद्ध से शत्रु उत्पन्न होते हैं। शत्रुओं से फिर युद्ध उत्पन्न होता है और युद्ध से फिर शत्रु। और इसी प्रकार दुनिया दुष्टता के दुष्चक्र में फँस जाती है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि मानव अपने मन पर नियंत्रण नहीं रख सकता।

आखिर मानव क्या है? मानव मनोवृत्तियों का अभिव्यक्तिकरण मात्र ही तो है। इसी प्रकार पदार्थ क्या है? पदार्थ भी तो मनोवृत्तियों का

शरीरीकरण मात्र है-- धनात्मक (कुशल) और ऋणात्मक (अकुशल) शक्तियों की प्रतिक्रियाओं का परिणाम मात्र। भगवान ने कहा है-- *''चित्तेन नीयति लोको''* -- संसार चित्त की ही उपज है। इसलिए चित्त ही प्रधान है, सर्वोपरि है। अत: हमें चित्त और उसकी विशिष्ट विशेषताओं का अध्ययन करना चाहिए जिससे कि हम विश्व की समस्याओं का उचित समाधान ढूंढ सकें।

बुद्ध-शिक्षा में व्यावहारिक प्रयोगात्मक अनुसंधान के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र है। जो भी हमारे अनुभवों से लाभ उठाना चाहें, हम उनका सहर्ष स्वागत करेंगे।

देवियो और सज्जनो! मैंने इस बात का प्रयत्न किया है कि आपको बुद्ध-शिक्षा की वे सारी विशेषताएं बता दूं जो कि मुझे ज्ञात हैं। आपमें से कोई किसी प्रश्न पर विचार-विमर्श करना चाहता हो तो मैं उस पर और भी प्रकाश डालने को तैयार हूं। आपने मेरे व्याख्यानों में रुचि दिखलाई और उपस्थित हुए इसलिए मैं आपका आभार मानता हूं। मुझे यहां व्याख्यान देने की अनुमति दी, इसलिए गिरिजाघर के पादरियों को भी एक बार पुन: धन्यवाद देता हूं।

सब्बे सत्ता सुखी होन्तु!। (समाप्त)

आनापानसति सुत्त प्रवचन

(धम्मगिरि, जनवरी 14, 1991-- स.ना. गोयन्का)

पालि-हिन्दी– मज्झिमनिकाये, ततियो वग्गो

।। नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।।

आनापानस्सतिसुत्तं - आनापान की साधना से सम्बन्धित सूत्र।

पुब्बारामे भिक्खुनं धम्मदेसना - पूर्वाराम में भिक्षुओं को धर्मोपदेश

पुब्बाराम-- पूर्वाराम। श्रावस्ती के पूर्व दिशा में एक ध्यान केन्द्र बना। भगवान के राजगीर में रहते हुए श्रावस्ती का धनी व्यक्ति अनाथपिण्डिक, भगवान के संपर्क में आकर के श्रोतापन्न अवस्था पर पहुँचा। जब आदमी धर्म-रस चख लेता है तब उससे रहा नहीं जाता। वह चाहता है कि अधिक से अधिक लोगों को ऐसा धर्म-रस मिले। जैसे निर्वाण के परम सुख का मैंने रस चखा है, ऐसे अनेक लोग चखें। तो भगवान से आग्रह करके इस बात की अनुमति लेकर निर्णय करता है कि श्रावस्ती में एक बड़ा ध्यान केन्द्र बनना चाहिए। इसके लिए वह धरती पर मोहरें बिछाकरके जेतवन में एक ध्यान केन्द्र बनाता है। भगवान वहां जाते हैं, वर्षावास बिताते हैं। यह वह समय है जब श्रावस्ती भारत का सबसे अधिक आबादी वाला नगर था। अनेक पारमी संपन्न लोग उस समय वहां जन्मे, वहां पहुँचे, उस नगर में रहे और भगवान के सम्पर्क में आए। अनेकों का कल्याण हुआ।

वहीं की रहने वाली एक बहुत धनी महिला, माता विशाखा। वह बहुत पहले भगवान के सम्पर्क में आ चुकी थी लेकिन उस ओर ब्याही गई। जब श्रावस्ती में रहती तब बार-बार भगवान के इस आश्रम में आया करती, साधना करती, धर्म श्रवण करती, लोगों की सेवा करती, साधकों की, भिक्षु-भिक्षुणियों की सेवा करती। बहुत दान देती।

अनाथपिण्डिक का बनाया हुआ यह विहार बहुत विशाल था, जिसमें दस हजार लोग रह करके साधना कर सकें। लेकिन फिर भी लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है, बढ़ती ही जा रही है। तो बार-बार उसके मन में आता था कि मैं भी कोई ऐसा बड़ा दान करूं कि जिस स्थान पर बैठ करके लोग विपश्यना कर सकें, मुक्ति का रास्ता प्राप्त कर सकें। यह चिन्तन बार-बार उसके मन में चलता था।

एक समय ऐसा आया कि जब वह भगवान के दर्शनों के लिए आई तब एक बहुत कीमती चुनरी पहन रखी थी उसने। जिसकी कीमत बहुत अधिक थी। क्योंकि सोने के तारों से बनी थी और उसमें बहुत से कीमती हीरे-जवाहरात लगे हुए थे। उस चुनरी के साथ सिर पर एक जड़ाऊ ताज लगा हुआ। वह किसी अन्य काम से गई थी, और भगवान के आश्रम में आई तो वह कीमती चुनरी पहने हुए आ गई। फिर होश आया कि यह मैंने क्या किया? तो उसे एक ओर उतार कर रख दिया। भगवान का प्रवचन सुन करके बाहर निकल आई, तब याद आया कि चुनरी वहीं छोड़ आई। जब वहां गई तो देखा कि किसी ने उसे वहां से उठा कर एक ओर रख दिया है। बड़ी प्रसन्न हुई कि किसी ने उठा कर रख दिया। किसी ने इसे उठा लिया, तो अब मेरी नहीं, उसकी हो गयी। मुझे दान देना ही था तो इस चुनरी को बेच करके इसके जितने पैसे आयँगे उससे एक विहार बनाऊंगी।

वह इतनी कीमती चुनरी, कोई उसको खरीदने वाला नहीं। तो स्वयं ही कई करोड़ रुपयों की कीमत आंक करके उतने करोड़ रुपये में वह चुनरी स्वयं खरीदी और उससे एक विहार बनवाया। वहां पांच हजार लोग बैठकर ध्यान कर सकें, रह सकें। उसका नाम- *पुब्बाराम*- पूर्वाराम। इस पूर्वाराम में भगवान का यह महत्त्वपूर्ण उपदेश।

"एवं मे सुतं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति पुब्बारामे मिगारमातुपासादे"। विशाखा को लोग मिगारमाता कहते थे। *"मिगारमातुपासादे सम्बहुलेहि अभिञ्ञातेहि अभिञ्ञातेहि थेरेहि सावकेहि सद्धिं"।* एक समय भगवान श्रावस्ती में मिगारमाता के बनाए *पुब्बाराम* विहार में रहे थे, उस समय अनेक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध भिक्षु स्थविर उनके साथ थे। जैसे– *"आयस्मता च सारिपुत्तेन आयस्मता च महामोग्गल्लानेन आयस्मता च महाकस्सपेन आयस्मता च महाकच्चायनेन आयस्मता च महाकोहितेन आयस्मता च महाकप्पिनेन आयस्मता च महाचुन्देन आयस्मता च अनिरुद्धेन आयस्मता च रेवतेन आयस्मता च आनन्देन अञ्ञेहि च अभिञ्ञातेहि अभिञ्ञातेहि थेरेहि सावकेहि सद्धिं"।* इस प्रकार के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध भिक्षु उनके साथ थे जैसे सारिपुत्र, महामोग्गलायन, महाकश्यप, महाकात्यायन, महाकोट्ठित, महाकप्पिन, महाचुन्द, अनिरुद्ध, रेवत, आनन्द और इसी प्रकार के और भी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थविर भिक्षु।

"तेन खो पन समयेन थेरा भिक्खू नवे भिक्खू ओवदन्ति अनुसासन्ति"। उस समय जो पुराने-पुराने स्थविर थे, बूढ़े स्थविर भिक्षु थे, वे नए भिक्षुओं को उपदेश देते थे। अनुशासित करते थे, माने विपश्यना सिखाते थे।

"अप्पेकच्चे थेरा भिक्खू दसपि भिक्खू ओवदन्ति अनुसासन्ति, अप्पेकच्चे थेरा भिक्खू वीसम्पि भिक्खू ओवदन्ति अनुसासन्ति, अप्पेकच्चे थेरा भिक्खू तिसम्पि भिक्खू ओवदन्ति अनुसासन्ति, अप्पेकच्चे थेरा भिक्खू चत्तारिसम्पि भिक्खू ओवदन्ति अनुसासन्ति। ते च नव भिक्खू थेरेहि भिक्खुहि ओवदियमाना अनुसासियमाना उळारं पुब्बेनापरं विसेसं जानन्ति"। उस समय कुछ एक बड़े भिक्षु दस नए भिक्षुओं को साथ लेकरके उनको ध्यान सिखाते थे, धर्म सिखाते थे। कुछ एक बड़े भिक्षु बीस को, तीस को, कुछ चालीस को। इस प्रकार जितने बड़े भिक्षु थे वे सब ध्यान सिखाने का काम करते थे। और उससे नए भिक्षुओं को लाभ होता था, वे सीखते थे धर्म।

"तेन खो पन समयेन भगवा तदहुपोसथे पण्णरसे पवारणाय पुण्णाय पुण्णमाय रत्तिया भिक्खुसङ्घपरिवुत्तो अब्भोकासे निसिन्नो होति"। उस समय भगवान खुले आकाश के तले, माने खुले में पूर्णिमा की रात को भिक्षुओं से घिरे हुए बैठे थे।

"अथ खो भगवा तुण्हीभूतं तुण्हीभूतं भिक्खुसङ्घं अनुविलोकेत्वा, भिक्खू आमन्तेसि"। उस समय चुपचाप बैठे हुए भिक्षुओं को भगवान ने बुला करके आमंत्रित किया, माने उपदेश सुनने के लिए कहा।

"आरद्धोस्मि, भिक्खवे, इमाय पटिपदाय आरद्धचित्तोस्मि, भिक्खवे, इमाय पटिपदाय"। यह बुद्ध की विशेषता। उपदेश देने वाले तो बहुत होते हैं, बहुत हुए। भारत धर्म के उपदेश में अव्वल रहा। यह व्यक्ति जो उपदेश देता है-- कहता है मैंने ऐसा किया है। मैंने ऐसा अभ्यास स्वयं किया है, इसलिए कहता हूं ऐसा अभ्यास तुम भी करो। मैं स्वयं इस रास्ते पर चला हूं। इसलिए तुम्हें कहता हूं-- तुम भी इस रास्ते पर चलो। क्योंकि ऐसा अभ्यास करके, ऐसे रास्ते पर चल कर, मैंने अपना कल्याण साधा है। यानी, अपने अनुभव से जो प्राप्त हुआ, वही लोगों को सिखाया। यह बहुत बड़ी विशेषता थी बुद्ध की। अन्यथा केवल धर्म के सिद्धांतों का प्रवचन देना, लोगों को समझाना, अलग बात होती है, सामान्य आदमी भी कर सकता है। बुद्ध जैसा व्यक्ति ऐसा नहीं करेगा। जो कुछ स्वयं अनुभूति पर उतारा है, वही कहेगा। तो आरम्भ ही ऐसे करते हैं।

"आरद्धोस्मि, भिक्खवे, इमाय पटिपदाय"-- इस प्रतिपदा पर मैं स्वयं आरूढ़ हुआ हूं। मैं चला हूं इस प्रतिपदा पर, या इस रास्ते पर, इस मज्झिमा पटिपदा पर। *आरद्ध चित्तस्मि, भिक्खवे, इमाय पटिपदाय।* मैंने अपना चित्त इस पर आरूढ़ किया है। मैंने अपना चित्त लगाया है, इस रास्ते पर।

और तब कहते हैं-- .... क्रमशः ....

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में नौकरी के अवसर

1. **निदेशक, महाप्रबंधक, सहायक प्रबंधक एवं कार्यकर्ता-परियोजनाएं:** इन परियोजनाओं के अभ्यर्थी को मंत्रालय, MCGM, UDD, MTDC, MSD, MBMC जैसे सरकारी विभागों तथा अन्य संबंधित संगठनों के साथ समन्वय / अनुपालन / स्वीकृति लेने आदि का अनुभव होना चाहिए। सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों और मुंबईकरों को प्राथमिकता तथा योग्यतानुसार वेतन दिया जायगा।

2. **निदेशक-सीएसआर, महाप्रबंधक-सीएसआर, सहायक प्रबंधक-सीएसआर, और कार्यकारी-सीएसआर: CSR** के तहत उनके साथ उपलब्ध धनराशि को तैनात करने के लिए कंपनियों के साथ समन्वय और व्यवस्था के लिए पूर्णकालिक व्यक्ति। नौकरी प्रोफाइल में पगोडा तथा पगोडा-परिसर के बाहर विभिन्न प्रकार के काम शामिल हैं। उम्मीदवार को संचार-कौशल्य एवं मराठी और अंग्रेजी भाषा में प्रवीण होना आवश्यक है। मुंबईकरों को प्राथमिकता तथा योग्यतानुसार वेतन दिया जायगा। इन सभी प्रवृष्टियों के लिए विपश्यी साधक होना अनिवार्य नहीं है।

अपना परिचय व योग्यता-प्रमाण-पत्र के साथ निम्न **ई-मेल** पर आवेदन करें- chairman@globalpagoda.org and director.projects@globalpagoda.org

"धम्मजोति" के 25 वर्ष पूरे होने पर समारोह एवं म्यंमा-यात्रा

आगामी 28 सितंबर से 9 अक्टूबर तक म्यंमा की धम्मयात्रा का आयोजन किया गया है। म्यंमा के प्रमुख विपश्यना केंद्र "धम्मजोति" के 25 वर्ष पूरे होने पर यहां रजत जयंती समारोह मनाया जा रहा है। इस समय यहां संघदान सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम और साधनाओं का आयोजन होगा। उसके बाद श्वेडगोन पगोडा सहित लगभग सभी नये-पुराने प्रमुख साधना केंद्रों पर सामूहिक साधनाओं का कार्यक्रम रखा गया है। इसकी विस्तृत योजना धम्मजोति विपश्यना केंद्र के ट्रस्टियों और आचार्यों ने तैयार की है और यात्रा के लिए सुविधापूर्ण बसों की व्यवस्था के साथ स्थानीय होटलों में ठहरने तथा भोजनादि की व्यवस्था कर रखी है। साधकों को अपने खर्च से 28 सितंबर को धम्मजोति के समीप एक होटल में पहुँचना है । धम्मजोति के कार्यक्रमों के बाद धम्मयात्रा के लिए "पहले आओ, पहले पाओ" के आधार पर कुल 300 यात्रियों के लिए व्यवस्था की गयी है। विस्तृत जानकारी और बुकिंग के लिए निम्न व्यक्तियों से ईमेल पर सीधे संपर्क कर सकते हैं:--

1. Moe Mya Mya (Micky): dagon.mmm@gmail.com;
2. Daw Own Mar Htwe: dhammajotiyangon@gmail.com

विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा संचालित पालि पाठ्यक्रम पूना में भी

पूना के विपश्यी साधकों में अब पालि सीखने की इच्छा बलवती हो रही है। इसे ध्यान में रखते हुए विपश्यना विशोधन विन्यास ने **पूना में पालि-पाठ्यक्रम** चलाने की अनुमति दे दी है। गत वर्ष भी इसकी पहली बैच का प्रशिक्षण-कार्य पूरा हुआ था। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम 17 जून, 2018 से मार्च, 2019 तक चलेगा। पढ़ाई का समय हर रविवार, सायं 5 से 7 बजे तक. **स्थान-** निर्वाणा हाइट्स, कोथरूड, पुणे. रजिस्ट्रेशन शृंखला- https://goo.gl/M3Yptg; or contact: 020- 24468903, 24436250

मंगल मृत्यु

श्री ओंकारलाल लोखंडे ने 84 वर्ष की आयु में भोपाल के अपने निवास पर शांतिपूर्वक शरीर त्यागा। वे साधना आरंभ करने के साथ ही धर्मपथ पर आगे बढ़ते गये। वर्ष 1997 में सहायक आचार्य व 1999 में वरिष्ठ सहायक आचार्य बने। अपने ही घर पर सामूहिक साधना और प्रत्येक रविवार एक दिवसीय शिविर लगाकर लोगों को नियमित साधना करते रहने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। अनेक जिप्सी शिविरों में धर्मसेवा दी। धम्मबोधि केन्द्र, बोधगया पर धर्मपत्नी के साथ रहकर लगभग 6 महीने तक लंबी धर्मसेवा दी एवं अन्य स्थानों पर भी जाकर धर्म प्रसार का कार्य करते रहे। धर्मपथ पर उनकी प्रगति हेतु धर्म-परिवार की समस्त मंगल कामनाएं।

ग्लोबल पगोडा में विशेष एक दिवसीय शिविर 3 जुलाई, 2018

भगवान बुद्ध ने आषाढ़ी पूर्णमा (जुलाई) में सारनाथ में धम्मचक्कपवत्तन किया था। उसी तर्ज पर 2500 वर्ष पश्चात पूज्य गुरुजी ने मुंबई में 3 से 13 जुलाई तक पहला शिविर संचालित किया। यह एक प्रकार से इतिहास की पुनरावृत्ति है। इस माने में 3 जुलाई, मंगलवार को इसकी 50वीं वर्षगांठ पर ग्लोबल वि. पगोडा में एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। सभी पुराने साधक-साधिका, जिन्होंने विपश्यना का 1 दस दिवसीय शिविर पूरा किया हो, इसमें भाग लेकर धर्मलाभी हो सकते हैं। व्यवस्था हेतु बुकिंग आवश्यक है। आप अपने फोन से WhatsApp या SMS द्वारा नं. 8291894644 पर केवल YES टाइप करके भेज दें।

धम्मपदुम - त्रिवेंद्रम में एक नया विपश्यना केंद्र

कुछ साल पहले, त्रिवेंद्रम शहर के पुराने साधकों ने मिल कर सामूहिक साधनाओं का आयोजन शुरू किया था। 2014 में एक ट्रस्ट गठित किया गया और किराए के स्थान पर आठ जिप्सी शिविर आयोजित हुए। कुछ छोटे शिविर भी लगे। पिछले शिविर में 50 से अधिक पूर्णकालिक साधकों ने भाग लिया। साप्ताहिक सामूहिक साधना हर रविवार को नियमित रूप से आयोजित की जाती है, और लगभग हर महीने बच्चों के शिविर भी। पिछले कुछ महीनों से, एक स्थायी केंद्र बनाने का प्रयास हुआ और शहर से लगभग 19 किमी दूर अरुविक्कारा में शांत स्थान पर उपयुक्त, पर बहुत ही कीमती भूमि खरीदी गयी, जिसकी भरपाई और विकास हेतु साधक पुण्यार्जन का लाभ उठा सकते हैं। कृपया दान की रसीद के लिए संपर्क अवश्य करें:-- Account Name: Trivandrum Vipassana Meditation Centre, Bank A/c no: 34038853067, IFSC: SBIN0000941, SBI MAIN Branch, Statue, Trivandrum 695001.

Email: dhamma.trivandrum@gmail.com; Phone: 9447024791, 9387803208, **पूरा पता:** 'Shirdi', Ground Floor, Near Skyline Golf Links, Kowdiar, Trivandrum 695003.

धम्मनदी विपश्यना केंद्र, उडुपी (कर्नाटक)

धम्म धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से पश्चिमी भारत के तटीय क्षेत्र में फैल रहा है। ऐसे में, हमें यह घोषणा करने में प्रसन्नता हो रही है कि जनवरी 2018 में, 'उडुपी (कर्नाटक) विपश्यना ट्रस्ट' ने उडुपी के हेब्री के पास शिवपुरा गांव में 5.75 एकड़ जमीन खरीदी है। यह आरक्षित अरण्य (वन) से दो तरफ से घिरा है। इस शांतिपूर्ण आदर्श वायुमंडल में 80 से 100 साधकों का एक विपश्यना साधना केंद्र बन रहा है जो साधना के बहुत ही अनुकूल है। यहां एक छोटा धम्म हॉल बन गया है, जहां हर महीने के दूसरे रविवार को नियमित रूप से एक दिवसीय शिविर लगता है तथा सामूहिक साधना आदि के कार्यक्रम होते रहते हैं। तदर्थ सभी पुराने साधकों का हार्दिक स्वागत है। जो भी साधक चाहें, इसके विकास के पुण्यार्जन में भागीदार बन सकते हैं। बैंक विवरण व संपर्क पता:-- Account Name: **Karavali Vipassana Research Centre,** Bank: Canara Bank, Hebri, Account No: 2502101016750, IFSCode: CNRB0002502. **Contact:** 1. B V Pai – Mo: 9900736473/9481266076, **Email:** baburayavpai@gmail.com or SK. ajekar@gmail.com; 2. Jayant Shetty -8217605480/7026929172

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री बसंतलाल पटेल, धम्मबल, जबलपुर के केंद्र-आचार्य के सहायक के रूप में सेवा

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री विजय सिंह राजावत, मुंबई
2. Mrs. Alice Pan (Su-Ying Pan), Taiwan
3. Mrs. Hsiu-Yueh Weng, Taiwan
4. Mrs. Jui-Mei Hsieh, Taiwan
5. Mr. Ying-Mao Lin, Taiwan
6-7. Mr. Po-Hsiu Chang & Mrs. Tung-Mei Tsai, Taiwan
8. Ms. Jo Hsin Hsiao, Taiwan
9. Mrs. Florence Qiaoling Fang, China
10. Mrs. Song Jun-ying, China

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री सतवीर मान, हरियाणा
2. श्री प्रकाश गेडाम, भोपाल
3. श्रीमती उमा पटेल, राजकोट
4. श्री विजय मुखेदकर, पुणे
5. Ms. Vannath Chea, Combodia

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्री किसनगिरी गोस्वामी, कच्छ
2. श्री अरविंद ठक्कर, कच्छ
3. श्री पियुष ठक्कर कच्छ
4. कु. हेतल सोरथिया, कच्छ
5. श्रीमती सेजल गोस्वामी, कच्छ
6-7. श्री श्रीनिवास एवं श्रीमती सुप्रिया अम्बेकर, मुंबई
8. श्रीमती भावना झालानी, दिल्ली
9. Mr. Piotr Suffczynski, Poland
10. Ms. Mananat Phongsuwan, Thailand
11. Mr. Suchin Thongnoppakun, Thailand
12. Ms. Kitima Silabutr, Thailand

Registered No. NSK/RNP-235/2018-2020

ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिचालनार्थ सेंचुरीज कॉर्पस फंड

पूज्य गुरुजी की इच्छा थी कि **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** अगले दो-ढाई हजार वर्षों तक सुचारु रूप से लोगों की धर्मसेवा करता रहे, परंतु यहां आने वालों से कोई शुल्क न लिया जाय, ताकि गरीब-अमीर सभी लोग यहां आसानी से पहुँच सकें और सद्धर्म की जानकारी लेकर धर्मलाभ प्राप्त कर सकें, और इसके दैनिक खर्च को संभालने के लिए एक **'सेंचुरीज कार्पस फंड'** की व्यवस्था की जाय। उनकी इस महान इच्छा को पूर्ण करने के लिए **'ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन'** (GVF) ने हिसाब लगाया कि यदि 8760 लोग, प्रत्येक व्यक्ति रु. 1,42,694/-, एक वर्ष के अंदर जमा कर दें, तो 125 करोड़ रु. हो जायँगे और उसके मासिक ब्याज से यह खर्च पूरा होने लगेगा।

संतों की वाणी है कि जब तक भगवान बुद्ध की धातु रहेगी, उनका धर्म भी कायम रहेगा। इस माने में केवल पत्थरों से बना यह धातुगब्भ पगोडा हजारों वर्षों तक बुद्ध-धातुओं को सुरक्षित रखेगा और इसमें ध्याभ्यास करने वाले असंख्य प्राणियों को धर्मलाभ मिलेगा। यानी, इसके परिचालन की भारी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु, साधक तथा असाधक सभी दानियों को सहस्राब्दियों तक अपनी धर्मदान की पारमी बढ़ाने का एक सुखद सुअवसर है। अधिक जानकारी तथा निधि भेजने हेतु **संपर्क**:-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512 / 62427510; **Email--** audits@globalpagoda.org; **Bank Details:** 'Global Vipassana Foundation' (GVF), Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No.- 911010032397802; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

धम्मालय-2 (आवास-गृह) का निर्माण कार्य

पगोडा परिसर में 'एक दिवसीय' महाशिविरों में दूर से आने वाले साधकों तथा धर्मसेवकों के लिए रात्रि-विश्राम की निःशुल्क सुविधा हेतु "धम्मालय-2" आवास-गृह का निर्माण कार्य होगा। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे कृपया उपरोक्त (GVF) के पते पर संपर्क करें।

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी **धातु-गब्भ** पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण दार्घकाल तक धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। संपर्क- उपरोक्त (GVF) के पते पर...

आवासीय कार्यशाला : "जातक कथा और मॅनेजमेंट" तथा "विपश्यना और संतवाणी"

दिनांक: ऑक्टोबर ८ से १२, २०१८. **स्थान:** विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडा परिसर, गोराईगांव, बोरीवली (प), मुंबई । आवेदन-पत्र 31 जुलाई तक अवश्य भेज दें। **अधिक जानकारी एवं आवेदन-पत्र भेजने के लिए:** http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses इस शृंखला का अनुसरण करें| **संपर्क:** VRI office: 022- 62427560 (9:30 AM to 5:30 PM) **E-mail:** mumbai@vridhamma.org

ग्लोबल पगोडा में सन 2018 के एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार 29 जुलाई- **आषाढ़ी पूर्णिमा, रविवार** 30 सितंबर- **शरद पूर्णिमा** एवं **पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि** *(29 सितंबर)* के उपलक्ष्य में **एक दिवसीय** महाशिविर होंगे। **समय-** प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो-** सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

अंतर में प्रज्ञा जगी, दुःख हुए सब दूर।
मैत्री करुणा प्यार से, भरा हृदय भरपूर।।

सुख-दुख अपने हाथ में, अन्य न दाता कोय।
जो समझे इस सत्य को, प्रज्ञाधर है सोय।।

शठ के प्रति शठता करे, बालापन की बात।
प्रज्ञा जागे स्वयं की, करे नहीं अपघात।।

समझ लिया है सार को, छोड़ दिया निस्सार।
सम्यक-द्रष्टा विज्ञजन, वे ही पायें सार।।

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

ग्यान और विग्यान रो, भर्यो घणो भंडार।
आत्मग्यान बिन ग्यान सब, बणग्यो सिर को भार।।

जद जद सिर संकट पड़ै, प्रग्या देय जगाय।
रोयां पीट्यां दुख बढै, दुख घटणै रो नांय।।

बाहर बाहर खोजतां, मिलै न साचो ग्यान।
प्रग्या तो भीतर मिलै, भीतर ही निरवाण।।

बौद्ध कहायां के मिलै? सधै न कोई काम।
बोधि जगावै चिणख सी, हुवै सुखद परिणाम।।

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2562, ज्येष्ठ पूर्णिमा, 28 जून, 2018

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 15 JUNE, 2018, DATE OF PUBLICATION: 28 JUNE, 2018

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 244144,
244440. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org